पुरा सम्पदा रो महताऊ केन्द्र बीकानेर रो अभय जैन ग्रन्थालय, उणरा संस्थापक श्री अगरचन्द नाहटा : एक ऐतिहासिक विवेचन

डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा

राजस्थान इण बात रो गरब गुमेज कर सकै है कै अठै रा मारवाड़ी सेठ साहुकार नी केवल भारत ने बिणज-व्योपार अर औद्योगीकरण में आपरी एक अलग ओलखाण बणाई बल्कि अठै रै अकादमिक जगत में साहित्य, संस्कृति अर इतिहास रै संरक्षण अर उणरै सिरजण में भी आप री धाक जमावणै में कामयाब हुया। राजस्थान में इस्या सेठ साहुकारों री लाम्बी सूची है। आज आपां जिण स्वनामधन्य अगरचन्द जी नाटा री जन्मशती पर अठै उपस्थित हुया हाँ, वै राजस्थान रै बीकानेर अंचल रा एक इसै ही मावाड़ी परिवार सूं सम्बन्धित हा। श्री नाहटा नै आपरै पूरे 71 बरसां रै जीवणकाल में सूं अन्तिम 52 बरसां में साहित्य, संस्कृति रो संरक्षण अर सिरजण रो अवसर मिल्यो हो। जीवण रा इण सू पैलड़ा बरस तो श्री नाहटा जी आपरै पारिवारिक व्यवसाय नै ही समर्पित कर दिया हा। श्री नाहटा जी आपरै पारिवारिक व्यवसाय नै ही समर्पित कर दिया हा। श्री नाहटा जी जीवण रै इण अन्तिम अन्तराल में साहित्य संरक्षण अर सिरजण में इत्तो महताऊ अवदान दियो कै बीकानेर रो ओ पांचवीं क्लास पढ़ियोड़ो सेठ भारत भर रै अकादमिक जगत में असामान्य प्रसिद्धि कानी अग्रसर हुवंतों चल्यो गयो।

अपभ्रंस, प्राकृत, संस्कृत, पाली अर राजस्थानी भाषा री हस्तलिखित पाण्डुलिपियां नै आधार बणा अर श्री नाहटा जी द्वारा लिख्योड़ा अर विभिन्न पत्र-पत्रिकावां में प्रकाशित छः हजार रै अेड़ै गेड़ै लेख अर उणा द्वारा ही सम्पादित ऐतिहासिक ग्रन्थ, जिका तत्कालीन ऐतिहासिक भ्रान्तियां नै दूर करनै में सहयोगी रैया रे साथै उण द्वारा भारत रै विभिन्न अंचलां में बड़े-बड़े विद्वाना अर दूजा सुप्रसिद्ध व्यक्तियां रै नांव पर स्थापित पीठा में आयोजित हुवणै आंली भाषणमालावां में दिया गया विद्वत्तता पूर्ण भाषणां रै कारण की नाहटा जी देश रै ख्यानाम साहित्यकार अर इतिहासकारां री श्रेणी में जाय खडिया हुया। अठै आ बात उल्लेखजोग है कै श्री

नाहटाजी री इण सफळता री पृष्ठभूमि में उणां रै द्वारा स्थापित अभय जैन ग्रन्थालय में संग्रहीत आधार सामग्री ही नै मानियो जावे है। उणा आपरै अथक परिश्रम अर अध्ययनशील स्वभाव रै कारण ग्रन्थालय री इण आधार सामग्री री ख्याति देश भर में फैला दी।

श्री नाहटा जी रै उपरोक्त साहित्यिक अवदान नै ले अर लारलां वरसां में घणां ही आलेख, अभिनन्दन ग्रन्थ अर मोनोग्राफ लिख्या गया। पण मैं म्हारै इण आलेख में उणां सूं जुड़ियो एक पक्ष पुरालेखपालन क्षेत्र में उणरै अवदान माथै प्रकाश डालणै रो प्रयास करियो है। ओ विषय कुछ शुष्क जरूर है, पण महताऊ है।

उगणीसंवी सदी में पश्चिमी देशां में पुरालेखपालन विज्ञान नै खासो महत्त्व मिल्यो। इण रो प्रभाव भारत में भी पड़ियो। पण भारत में तो सदियां सूं पुरालेखपालन रै प्रति अठै रो जनमानस सचेत रयो हो, उणी क्रम में बीसवीं सदी में 1911 ई. में जन्मोड़ा श्री नाहटाजी रो झुकाव देर सवेर आप रै पारिवारिक बिणज-व्योपार री बजाय पुरालेखपालन कानी हूय जावणीं खास महाताऊ बात नीं है। इणरी पृष्ठभूमि में श्री नाहटा जी रै समकालीन परियावरण नै नी नकारियो जाय सकै। श्री नाहटा जिण परिवार में जन्म लियो बो सदियां सूं जैन धर्मावलम्बी खरतरगच्छ री मूर्तिपूजक शाखा सूं जुड़ियोड़ो एक धर्मपरायण मारवाड़ी परिवार हो। जैन धर्म री विविध गतिविधियां सूं परिचित लोग अर अध्येतागण इण बात नै जाणै है कै सगला ही जैन सम्प्रदायां में आपरै प्राचीन सन्ता अर उणरा शिष्यां द्वारा सिरजित विविध विषयक गद्य अर पद्य री पाण्डुलिपियां नै सुरक्षित राखणै रो निरन्तर प्रयास करता रेवणै री परम्परां ही। खरतरगच्छ रा मूर्तिपूजका रा यति प्रधान जैन उपाश्रयां में तो जैन धर्म री हस्तलिखित पाण्डुलिपियां रै संरक्षण रो काम बड़े व्यापक रूप में देखियो जाय सकै। युवा अवस्थां आतां आतं श्री नाहटा आपरै खरतरगच्छ सम्प्रदाय री पाण्डुलिपि संरक्षण विद्या सूं थोड़ा घणा परिचित अवश्य हुयग्या हा। पण अबार तांई श्री नाहटा जी इण विद्या सूं घणा प्रभावित नीं हुया हा। जीवण रै सत्रहवै साल में श्री नाहटाजी आपरै पारिवारिक बिणज-व्योपार री गद्दियां संभालण सारूं बंगाल अर आसाम जाय पहुंच्या। उण समय बंगाल अर आसाम दोन्यूं ही प्रदेश अंगरेजी भारत रा अभिन्न अंग हा अर उठै राजस्थान रै राज्यां री अपेक्षा जीवण में खुलोपण बेसी हो। इण समय

भारत में भारत री अंगरेजी सरकार ब्रिटिश ओपनिवेसिक नीति नै विस्तार देवण सारू भारत री पुरासम्पदा माथै भी आपरी आंख गड़ा चुकी ही। उण रै उत्खनन, खोज अर संरक्षण रै नांव सूं आपरै उद्देश्य में सफल हुवणै रो प्रयास करण लागगी ही। इण समय पश्चिमी देशां रा विद्वान भारत में जैन साधुवां रै उपाश्रयां अर भण्डारा सूं भी ले जावणी सरू कर दी। इटेलियन विद्वान टेसीटोरी भी इण सूं अछूतो नीं हो। इण सूं धर्मपरायण युवा ओसवाल जैन सेठ साहुकार आप री पाण्डुलिपि रूपी इण थाती रै महत्त्व नै समझियो अर देखता-देखता अंगरेजी भारत रै बड़े-बड़े व्यावसायिक केन्द्रा रै साथै बंगाल, गुजरात, विदर्भ अर राजस्थान में विभिन्न सम्प्रदायां री पाण्डुलिपियां रै संरक्षण सारू जैन ज्ञान भण्डार स्थापित करणा सरू कर दिया।

बैइयां श्री नाहटाजी रै बीकानेर स्थित निवास स्थान कनै दो बड़ा जैन उपाश्रय पैली सूं ही विद्यमान हा, जठै बड़े स्तर पर जैन पाण्डुलिपियां रो संग्रह अर संरक्षण होय रेयो हो। ज्यों-ज्यों श्री नाहटा जी री उमर परवांण चढ़ी अर समझ बढ़ी, दूजी कानी, आपरै गृह नगर बीकानेर में महाराजा अनूपसिंह पुस्तकालय री जैन, अजैन धर्म री पाण्डुलिपियां रो अठै रा तत्कालीन विद्वानां द्वारा किये जाय रेये अवगाहन अर प्रकाशन रै बारै में भी सुणियौं पण श्री नाहटाजी स्वयं ही, कैया करता हा कि पाण्डुलिपियां कांनी उणा रो झुकाव सन् 1927 में जद बै गुजरात रा जैन विद्वान मोहन लाल देसाई रो सोलवीं सदी रै जैन सन्त समय सुन्दर रै सम्बन्ध में प्रकाशित आलेख नै पड़ियो तो, उणमें कलकत्ते रै सेठ पूर्णचन्द नाहर रै जैन समाज री प्राचीन पाण्डुलिपियां रो बड़ो संग्रह अर दुर्लभ वस्तुआं नै देख अर श्री नाहटाजी भी बीकानेर में इसो एक आपरै स्वयं रै परिवार री स्मृति में संग्रहालय बणावणै रो मन बाणाय लियो।

बस उण दिन सूं श्री नाहटाजी आपरै व्यापार कांनी कम अर जैन पाण्डुलिपियां रै संग्रहण कांनी ज्यादा समय देवण रो मन बणाय लियौ। बीकानेर आवतां ही आप री पारिवारिक अचल सम्पत्ति रै एक भाग माथै आप आपरै बड़े दिवगत भाई अभय राज री स्मृति में अभय जैन ग्रन्थालय नै थरप दियौं इण रै ऊपर ही आपरै पिता श्री शंकरदान जी री स्मृति में दुर्लभ वस्तुआं रो कला भवन बणाय दियों। परिवार रै आर्थिक सहयोग सूं श्री नाहटा जी इत्ते कठिन काम हाथ में तो लेलियों पण

इण ग्रन्थालय नै विकसित करणौ इत्ते आसान नी हो। राजस्थान रा मारवाड़ी व्योपारी आपरै व्यापार में रिस्क लेवणै रा आदी हा, इण खातर ही श्रीनाहटा जी इत्तो दुर्लभ काम हात में लेवणै में हिचकिचाया कोनी।

अठै आ बात ध्यान देवणै री है पुरालेख पालन री इण प्रक्रिया में शामिल हुवणै तक श्री नाहटा प्राचीन भाषावां रा विद्वान कम अर व्यापारी जयादा हा। उण समय तक इण धर्म परायण व्यक्तित्व रै घणी नै मुड़िया भासा रै साथै राजस्थानी अर हिन्दी रो साधारण ज्ञान ही प्राप्त हो। बंगला अर असमियां नै समझ भी लेवता हा। पण इण पछै धुन रा धणी श्री नाहटा जी, आपरै पूरै जीवनकाली में इण संग्रहालय नै विभिन्न, भाषावां अर लिपियां, धर्म सूं सम्बन्धित पाण्डुलिपियां रो संग्रह रो अवगाहन अर उण माथै टिप्पणियां लिखत-लिखत प्राकृत, अपभ्रंस अर गुजराती, राजस्थानी अर हिन्दी, भाषावां सूं खासा परिचित हुयग्या।

श्री नाहटा जी रै सामै प्रश्न हो कै ग्रन्थालय नै पाण्डुलिपियां अर ग्रंन्था सूं समृद्ध कियां करियौ जाये? इण सारु उणा सबसू पैली आप स्वयं रै खरतरगच्छ मूर्तिपूजक यतियां द्वारा संचालित जैन उपाश्रया नै खंगालणौ सरू करियो। यति गणां ने नाहटाजी उण रा उपश्रयां में संग्रहीत सदियां पुराणी जैन पाण्डुलिपियां रै समय रै साथै नष्ट हुवणै री जाणकारी दी अर पाण्डुलिपियां री उचित रख रखाव सारु सुझाव दिया। इण रै साथ यति गणां सू जठै संभव हुयो अभय जैन ग्रन्थालय में उणां रै अठैरी पाण्डुलिपियां नै संभाल अर राखण सारु मूल पाण्डुलिपियां भी प्राप्त कीवी पण जठै पाण्डुलिपियां लावणों संभव नी हो, उणरी नकलां प्राप्त करण री व्यवस्था करी। उपाश्रयां में बरसां सू बन्द गुभांरिया नै खुलवा अर एक दूसरै सू चिपक्योड़ी, भीज्योड़ी अर बदबूदार पाण्डुलिपियां नै बारै निकाल अर उणा री छंटाई, बिखरोड़ीनै एक जाई करी। जठै उपासरा रा यति गण मान जाता उठै तो इण जीर्णशीर्ण पाण्डुलिपियां नै ग्रन्थालय में ले आवता, नी तो आं री भी नकला करवाव लेवता। धीरे-धीरे ओ उपक्रम बीकानेर सूं बारै राजस्थान रा दूसरा उपाश्रयां में भी करियौगयो। इण काम में श्री अगरचन्द नाहटा रा भतीजा श्री भंवरलाल जी नाहटा उणां री खासी मदद करी।

पाण्डुलिपियां रै साथ पुराणा ग्रन्थां सारु राजस्थान अर उण सूं बारै रा पुराणी

किताबां री दुकानां अर कबाड़िया तक सूं सम्पर्क साधियो गयेा अर सैंकड़ा दूर्लभ ग्रन्थ उठै सूं लाया गया। श्री नाहटा जठै कठै आपरै धन्धे रे संभालण नै जावता, उणां रो ओ उपक्रम बैठे भी बणियों रेवतो। जठै संभव हुवतों उठै पाण्डुलिपि धारकां सूं महताऊ पाण्डुलिपियाँ अर पुस्तका नै खरीद भी लियो जावतौ हो। धीरे-धीरे पुराणा मारवाड़ी व्यापारी घरांणा रा युवा उत्तराधिकारी आपरै अठै संग्रहीत महताऊ पुस्तकां, ग्रन्थां, ने श्री नाहटा जी रै ग्रन्थागार सोंपनो उचित समझता।ज्यों-ज्यों श्री नाहटा जी रै ग्रन्थागार री लोगां नै जाणकारी मिलण लागी, त्यों-त्यों देश भर रा जैन धर्म सूं जुड़िया विद्वान अर लेखक आपरी प्रकाशित पुस्तका ने ग्रन्थागार में अवश्य भेजता। परिणाम स्वरूप अभय जैन ग्रन्थालय जैन धर्म रै ग्रन्था रो एक समृद्ध अर महताऊ ग्रन्थागार बणग्यो हो।

इण तरह सूं श्री नाहटाजी पुरालेखपालन रै पहले चरण ग्रन्था रै संग्रहण रै कार्य में तो खासा सफल होय रेया हा। पण पुरालेखपालन रो दूजो चरण घणों महताऊ अर कठिन हो, उणनै भी पूरै करण रो श्री नाहटा जी ब्रत लेलियों। ग्रन्थागार में संग्रहीत सगला हस्तलिखित ग्रन्था नै विषय अर कालक्रम रै अनुसार करणै रै पछै उणां नै सूचीबद्ध करने रो काम हाथ में लियौ। जद ओ काम गति पकड़ ग्यों तो श्री नाहटा जी इण री विस्तृत सूची बणावणी री काम सरु करवाये। इण काम नै श्री नाहटा जी स्वयं ही बड़े मनोयोगे सूं ही करता हा। इण भांत पुरालेखपालन रो दूसरो चरण पूरो करियां पछै नाहटा जी इण री विस्तृत सूची बणावणी री काम सरु करवाये। इण काम नै श्री नाहटा जी स्वयं ही बड़े मनोयोग सूं ही करता हा। इण भांत पुरालेखपालन रो दूसरो चरण पूरो करियां पछै नाहटा जी, आपरै ग्रन्थालय री इण सूचीबद्ध अभिलेख सामग्री रो शोधकर्त्ता अर विद्वत समाज सूं परिचय करवावणै रो दुरुह कार्य हाथ में लियो। श्री नाहटा हर पाण्डुलिपि पर एक समीक्षात्मक अर परिचयात्मक टिप्पणी लिख अर एक आलेख रो रुप देअर भारत री हर हिन्दी भाषी शोध अर साहित्यिक पत्रिकावां में प्रकाशित करवावणों सरु कर दियो। इण सूं जिज्ञासु लोग दूर-दूर सूं इण पाण्डुलिपियां री विस्तृत जाणकारियां लेवण नै पत्र-व्यवहार करण लागा। इण रै साथै ही जिकी पाण्डुलिपि श्री नाहटा जी नै महत्त्वपूर्ण लागती उणरों सम्पादन रो काम भी हाथ में ले लेवता। श्री नाहटा जी खुले दिमाग रा

आदमी हा, जठै उणा नै लागतो कै फलां पाण्डुलिपि अत्यधिक ऐतिहासिक या साहित्यिक महत्तव री है, उण रो सम्पादकीय लिखणै रो दायित्व बै सम्बन्धित विषय रै विद्वान सूं ही लिखवा देता। इण सूं उण सम्पादित ग्रन्थ रो महत्त्व घणो बधजावतो हो। कुछ पाण्डुलिपियां नै बै मूलरुप सूं प्रकाशित कर उण पर आप स्वयं री भूमिका लिख देवता। इण तरियां री बां अनेक पुस्तकां प्रकाशित करी। श्री नाहटाजी रो पुरालेखपालन सूं जुड़ियोंड़ौ दायित्य अठै ही पूरां नी हुअै, बै आपरै अठै आवणै आला शोध छात्रा नै उणां रै शोध विषय रै चयन सूं लेअर, उणरों शोध निर्देशन तक करणै रो दायित्व भी संभालता। श्री नाहटा ओ शोध निर्देशन रो दायित्व भी बहुत ही सांतरै ढ़ंग सूं पूरो करता। कठोर अनुशासन अर परिश्रमी श्री नाहटा जी आपरै कनै आवणै आळै शोध छात्र सूं भी इसी अपेक्षा राखता। इण आलेख रो लेखक स्वयं भी दो अढ़ाई बरसां तांई नाहटा जी रो निर्देशन प्राप्त करियौ। भारत रा नामी गिरामी विश्वविद्यालयां रा भारत प्रसिद्ध इतिहास अर साहित्य रा प्रोफेसर आपरै शोध अध्येतांवा नै श्री नाहटा जी नै सोंप देवता हा। श्री नाहटा जी जद ओ देखलेता कै बार सूं आयोड़ो फलां शोध अध्येता काम करण में रुची राखै है तो उणरी बै आप रै घर रै दानखाने में रेवण री व्यवस्था कर देवता। भोजन जो खुद करता बो उण नै भी खुवाता। ग्रन्थालय में खुद री उपस्थिति में उणनै आपरै अठै री शोध सामग्री उपलब्ध करवाता। श्री नाहटा जी देर तांई बैठता तो शोध छात्र नै भी बठै ही बैठतों पड़तो। इण ढंग सूं उणां रै निर्देशन में काम करणियां अनेक अध्येता आज तांई बड़ा-बड़ा प्रोफेसरां रै पद पर आसीन हा। धीरे-धीरे शोध छात्रा ही नी देश रा नामी गिरामी शोध संस्थावां रा पदाधिकारी, नामी इतिहासकार, साहित्यकार जद भी बीकानेर आवता तो श्री नाहटा जी सूं मिला बिना नी जावता।

अठै एक बात बतावण जोग है कि श्री नाहटा जी खाली पाण्डुलिपियां अर ग्रन्था रो संकलन ही नी करियौ, बै उण सू आत्मिक लगाव भी राखता हा। जद कदी नाहटा जी दिसावर सूं लाम्बे प्रवास पाछे बीकानेर लौटता तो उण रै साथै रेलगाड़ी में एक या दो बोरी ग्रन्था सूं भरियोड़ी जरुर हुवती ही श्री नाहटा जी इण बोरियां नै या तो आपरै कनै सीट ऊपर राखता या, संभव हुवतों तो ऊपर आली सीट माथै राख देता हा। पण जठै यात्री जगां रै अभाव में बोरियों नै नीचै राखणै रो आग्रह करता तो नाहटा

जी खुद नीचे बैठ जाता पण बोरी नै नीचै को राखता नी। केवणै रो मतळब है एक साचों पुरालेखपालक रै रूप में श्री नाहटा जी आपरो पुरालेखपालन रो धर्म निभावता। ओ ही नी अभय जैन ग्रन्थागार में देशी ढंग सूं पाण्डुलिपियां अर ग्रन्था रो निरन्तर परिरक्षण करवावता रैवया। धन्य है श्री नाहटा जी रै पुरालेखपाल रै मन नै जिको आपरै उद्देश्य सूं विचलित नी हुयो।

श्री नाहटा जी रो पुरालेखपाल रो दायित्व अठै ही समाप्त नी हुयगयो हो। करत करत अभ्यास तै जड़ीयत होय सुजान री कहावत नै चरितार्थ करता हुया श्री नाहटा जी जिण भांत प्राचीन पाण्डुलिपियां ने खगांलता-खगांलता विभिन्न भाषावां अर लिपियां रा जाणीकार हुयग्या, उणी भाँत बै पाण्डुलिपि री भाषा अर लिपि रै मोड़ तोड़ नै देख अर, उण रो काल निर्धारण कर दिया करता, चित्राम नै देख अर चित्र नै देख अर चित्र नै कुण कलाकार अर कद बणायो बताय देवता। केवणै रो मतलब ओह के उणमें एक अच्छे पुरालेखपाल रो पाण्डुलिपियां रो मूल्यांकन करण रो गुण भी विद्यमान हो।

अंत में देखां हां कै श्री नाहटाजी, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टेगोर री सुप्रसिद्ध कविता री पंक्ति 'जोदी तोर डाक शुने कोऊ ना आवे तोबे एक्ला चलो रे' नै आपरै व्यवहारिक जीवन में घांटो-घाट उतार अर आपरै सक्रिय जीवन रा 52 वर्षा री जीवण जात्रा में अकेला ही अभय जैन ग्रन्थालय जिसो विशाल अर महताऊ ग्रन्थागार देश नै समर्पित कर दियो। इण ग्रन्थागार री जूनी पोथियों रै साथै अठै संग्रहित 13वीं सदी सूं 20वीं सदी रै बीच काल री पुरा सम्पदा, जिण में विशेष रुप सूं ताड़पत्र, कागद अर कपड़े माथै लिखी पाण्डुलिपियां, वंशावलियां, तीर्थमलावां, पट्टावलियां, परवाना, खास रुक्का, विज्ञप्तिपंत्रा, गजला अर जुनी कलमा रा चित्राम अर पाण्डुलिपियां, देशभर रा कुछ प्रमुख जैन ज्ञान भण्डारां रा सूची पत्रां, टीपणा रै साथै दुलर्भ पुरातात्विक सामग्री आज भी सेठ नाहटाजी री मृत्यु पछै भी देश विदेश रा साहित्य अर इतिहास रा सैकडूं जिज्ञासु आपरी ज्ञान पिपासा नै शान्त करता निजर आवै।

अठै आ बात उल्लेखजोग है कै श्री अगरचन्द नाहटा एक साचो अर कर्त्तव्यनिष्ठ पुरालेखपाल रो धर्म निभावता हुया देश भर रै जैन साहित्य अर इतिहास

जगत में आपरी अलग पैठ बणाई। उणां हिन्दी साहित्य रै इतिहास में दखल देवता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य रे इतिहास में उणीं साहित्य रै आधार पर उणरी आदिकाल सम्बन्धी धारणा में सुधार सारु सागीड़ा तथ्य प्रस्तुत करिया। बाद में हजारी प्रसाद द्विवेदी उणी जैन साहित्य रै तथ्यां नै आधार मान अर आप रै हिन्दी साहित्य रे इतिहास में उणीं साहित्य रै आधार पर उणरी आदिकाल सम्बन्धी धारणा में सुधार सारु सागीड़ा तथ्य पुस्तुत करिया। बाद में हजारी प्रसाद द्विवेदी उणी जैन साहित्य रै तथ्यां नै आधार मान अर आप रै हिन्दी साहित्य रै इतिहास में जिको वीर गाथा काल केयो जावतो हो नै हिन्दी साहित्य रै आदिकाल रै रुप में स्वीकार करियो। इणी भांत आप जित्ता भी जैन साहित्य रा ऐतिहासिक ग्रन्थ सम्पादित करिया, उण में राजस्थान इतिहास रा अनेकु नवां तथ्य सामनै आया। 71 वर्ष री उमर में सन् 1982 ई. में ओ धुन रो धणी मारवाड़ी सेठ आपरी जीवण जात्रा पूरी कर भारत में पुरालेखागारीय इतिहास में आपरी तुच्छ पण सांतरी आहुति घालतो हुयो संसार त्याग दियो।

अलख सागर कुएँ के निकट,
बीकानेर